पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.08.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

डा. देवव्रत जी राज्यपाल बनें

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल बनने पर आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई। - अनिल आर्य

वर्ष-32 अंक-6 श्रावण-2072 दयानन्दाब्द 191 16 अगस्त से 31 अगस्त 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.08.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दयानन्द भवन में सोल्लास सम्पन्न

आंतकवाद के विरूद्व कठोर कदम उठाये सरकार- डा.अनिल आर्य

दीप प्रज्जवलित करते डा.अनिल आर्य,साथ में महेन्द्र भाई,रामकृष्ण शास्त्री,कै.अशोक गुलाटी,रामकुमार सिंह,यशोवीर आर्य,सुशील आर्य,प्रवीन आर्य,गवेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र—आर्य समाज,यमुना विहार,दिल्ली के नवनिर्वाचित मन्त्री,परिषद् के शिविरार्थी योगेश दहिया का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,रामकुमार सिंह,गवेन्द्र शास्त्री व महेन्द्र भाई जी।

रविवार, 2 अगस्त 2015,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व सक्रिय कार्यकताओं की बैठक महर्षि दयानन्द भवन,रामलीला मैदान,नई दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई। बैठक का कुशल संचालन राष्ट्रीय महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने किया।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आंतकवाद आज अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन चुका है, देश में भी परोक्ष व अपरोक्ष रूप से आंतकवाद के समर्थन में तथाकथित बुद्विजीवी दिखाई दे रहे हैं, यह चिन्ता का विषय है। केन्द्र सरकार को चाहिये कि इन विकट परिस्थतियों में कठोरता से कदम उठाये, क्योंकि राष्ट्र की एकता व सम्प्रभुता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। जो लोग आंतकवादियों का मीडिया मण्डन करते हैं आज उनके विरूद्वभी सख्त कदम उठाये जाने की आवश्यकता है, यह लोग भी सन्देह के घेरे में आ जाते हैं इनकी भी जांच की जानी चाहिये। डा.अनिल आर्य ने युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के लिये 14 अगस्त से 23 अगस्त 2015 तक ''युवा संस्कार अभियान'' का सफल बनाने का आह्वान किया, उन्होंने कहा कि चरित्रवान युवा पीढ़ी होगी तो मार्शल रखने की आवश्यकता नहीं होगी।

परिषद् के महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने कहा कि परिषद् जड़ को सींचने का कार्य करती है,सरकार को चाहिये कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा दी जाये जिससे संस्कारवान युवा तैयार होंगे।

इस अवसर पर श्री रामकृष्ण शास्त्री,यशोवीर आर्य,रामकुमार सिंह,सुशील आर्य,गजेन्द्र चौहान,रविन्द्र मेहता,सुरेश आर्य,कै.अशोक गुलाटी,प्रवीन आर्य,दिनेश आर्य(पलवल),डा.वीरपाल विद्यालंकार,प्रमोद चौधरी,अरूण आर्य,योगेन्द्र शर्मा,शिशुपाल आर्य,योगेन्द्र शास्त्री आदि ने भी अपने विचार रखे। आगामी 6 सितम्बर को 37 वें राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन को तन,मन,धन से सफल बनाने का सभी ने आश्वासन दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होस्टन ने विश्वबन्धुता का सन्देश दिया

रविवार, 2 अगस्त 2015,आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में दिनांक 30 जुलाई से 2 अगस्त 2015 तक 25 वें अन्तर्राश्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन होस्टन में किया गया। दिल्ली से परिशद् के 4 प्रतिनिधि सम्मेलन में सम्मलित हुए। चित्र में—केन्द्रीय आर्य युवक परिशद् के राश्ट्रीय प्रेस सचिव श्री देवेन्द्र भगत,चन्द्र दुर्गा,विक्रान्त चौधरी,विश्ववर्धन चौधरी भजन प्रस्तुत करते हुए। द्वितीय चित्र में—सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ स्वामी प्रणवानन्द जी,(दिल्ली), डा.विनय विद्यालंकार, सभा प्रधान देव महाजन, गिरीश खोसला, आचार्य बलबीर, डा.सोमदेव शास्त्री (मुम्बई),आचार्य ज्ञानेश्वर जी (रोजड़) आदि। सार्वदेशिक सभा के कोशाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री विजय आर्य (चण्डीगढ़) भी पंहुचे। ऋचा व प्रिया गुलाटी के मधुर भजन सभी ने पसन्द किए। सभा मन्त्री श्री भुवनेश खोसला व श्री विश्रुत आर्य ने कुशल मंच संचालन किया। आचार्य वेदश्रमी,श्री गिरीश खोसला,श्री शेखर अग्रवाल, श्री विजय भल्ला, श्री मुनीश गुलाटी, डा.हरीश, स्मृति श्रीवास्तव, विनिता अरोड़ा, डा.सुनेजा, आरती खन्ना, डा.अजय गुप्ता, डा.रमेश गुप्ता, डा.सुधीर आनन्द, श्री देव भल्ला, डा.दीन बी. चन्दोरा, श्री हवि शक्ति, श्री गोपाल दुर्गा आदि के पुरूशार्थ से सम्मेलन शानदार सफलता से सम्पन्न हुआ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37वें राष्ट्रीय अधिवेशन पर अपनी सहयोग राशी केवल 101/- रूपये शीघ्र भेजें।—अनिल आर्य

सनातन धर्म और आर्य समाज

- कृष्ण चन्द्र गर्ग

अथर्ववेद में 'सनातन' शब्द का अर्थ किया गया है -

सनातनमेनमाहुरताद्य स्यात् पुनर्णवः। अहोरात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः ।।

(अथर्ववेद 10-8-23)

अर्थ - सनातन उसको कहते हैं जो कभी पुराना न हो, सदा नया रहे, जैसे दिन-रात का चक्र सदा नया रहता है।

वेद - सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया वो ज्ञान है जिसकी मनुष्य को संसार में रहते हुए आवश्यकता है और जिसको जान करके मनुष्य सुख पूर्वक रह सकता है। 'वेद' शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। वेद ज्ञान दो अरब वर्ष पहले जितना सत्य और व्यवहारिक था आज भी उतना ही सत्य और व्यवहारिक है। अतः वेद सनातन हैं और वेद का ज्ञान भी सनातन है।

सनातन धर्म वेद को धर्म का आधार मानता है और आर्य समाज भी वेद को धर्म का आधार मानता है। वेदों के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थों में जो जो बातें वेद अनुकूल हैं आर्य समाज उन्हें स्वीकार करता है और जो जो बातें वेद विरुद्ध हैं आर्य समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता। सनातन धर्म ने बहुत सी बातें वेद विरुद्ध भी स्वीकार कर ली हैं। यही अन्तर है सनातन धर्म और आर्य समाज में। वेद विरुद्ध बातों को स्वीकार करना और उन्हें व्यवहार में अपनाना ही आर्य (हिन्दू) जाति के पतन का कारण बना है।

1. ईश्वर का स्वरूप - वेदों में अनेक स्थानों पर ईश्वर के स्वरूप का वर्णन है - **ओ३म् खं ब्रह्म।** (यजुर्वेद 40, 17) **अर्थ** — आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत का रक्षक ओ३म् है। **ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।** (यजुर्वेद 40, 1) **अर्थ** — इस गतिशील संसार में जो कुछ भी है उस सब में ईश्वर का वास है। **स पर्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम्।** (यजुर्वेद 40, 8) **अर्थ** — वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह शीघ्रकारी है। उसका कोई शरीर नहीं है। वह छिद्र रहित है। **न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः।** (यजुर्वेद 32, 3) **अर्थ** — उस परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है। उसे नापा या तोला नहीं जा सकता। उस परमात्मा का नामस्मरण अर्थात उसकी आज्ञा का पालन करना अर्थात धर्मयुक्त कामों का करना बहुत कीर्ति देने वाला है। वेद ईश्वर द्वारा दिया मनुष्यों के लिए विधान है। वेद के अनुसार चलना ही ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। वेद के विरुद्ध चलना ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना है। आर्य समाज वेद में वर्णित ईश्वर के इस स्वरूप को ही स्वीकार करता है।

2. मूर्तिपूजा — आर्य समाज मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा नहीं मानता। मूर्तिदर्शन मूर्तिदर्शन है, ईश्वर दर्शन नहीं है। संसार में बौद्ध काल से पहले किसी भी रूप में मूर्तिपूजा प्रचलित न थी। वेद, शास्त्र, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि किसी भी वैदिक ग्रन्थ में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। आदि शंकराचार्य, गुरु नानक देव, कबीर, दादू, समर्थ गुरु रामदास, राजा राममोहन राय, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों ने मूर्तिपूजा का पुरजोर खण्डन और विरोध किया है।

मूर्तिपूजा सबसे बड़ी अज्ञानता है। यह व्यर्थ ही नहीं अपितु हिन्दुओं के विनाश का सबसे बड़ा कारण है। मूर्तिपूजा के सहारे हिन्दू कायर, कमजोर, निरुत्साही और अपुरुषार्थी हुए हैं। मुसलमानों ने हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा है और वहां से अथाह धन लूटा है। किसी मूर्ति ने किसी हमलावर का सिर तक न फोड़ा। और भी, मूर्तिपूजा से सन्तुष्ट होकर हिन्दुओं ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयत्न भी नहीं किया। सर्वव्यापक होने से ईश्वर हमारे सब कामों को देखता है और जानता है। उनके अनुसार वह हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। वह पूर्ण न्यायकारी है। उसके न्याय से कोई बच नहीं सकता। यह बात जानकर बुरे कामों से बचा जाए ताकि उनके परिणाम स्वरूप दुख न भोगना पड़े। साथ ही ईश्वर के न्यायकारी, सत्यकर्त्ता, ज्ञानवान, पवित्र, दयालु आदि गुणों को याद करके उन्हें अपनाया जाए ताकि सुख मिले। यही ईश्वर का नाम स्मरण है। निराकार होने से ईश्वर आँख का विषय नहीं है। वह मन का विषय है। **न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चैनम्। हृदा हृदिस्थं मनसा च एनमेव विदुरमृतास्ते भवन्ति।।** (श्वेताश्वतर उपनिषद् 4-20) **अर्थ** — परमात्मा का काई रूप नहीं जिसे आँख से देखा जा सके। उसे कोई भी आँख से नहीं देखता। वह हृदय में स्थित है। जो उसे हृदय से तथा मन से जान लेते हैं वे आनन्द को प्राप्त करते हैं।

3. धर्म क्या है — महाभारत में विदुरनीति के अन्तर्गत श्लोक है - **नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति। न तत् सत्यं यत् छलेनाभ्युपेतम्।।** (विदुरनीति 3-58) अर्थ - वह धर्म नहीं है जहां सत्य नहीं है। वह सत्य नहीं है जिसमें छल है। इस प्रकार - सत्य यह धर्म, असत्य यह अधर्म। न्याय यह धर्म, अन्याय यह अधर्म। **निष्पक्ष यह धर्म, पक्षपात यह अधर्म। न लिंगम् धर्मकारणम्। (मनुस्मृति)** अर्थ - बाहरी चिन्ह किसी को धर्मात्मा नहीं बनाते। काला-पीला चोगा पहनना, दाढ़ी मूंछ या सिर के बाल बढ़ाना, कण्ठी-माला धारण करना, हाथ में चिमटा रखना, तिलक लगाना आदि बातों का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। **आचारः परमो धर्मः।** (मनुस्मृति 1-108) **अर्थ** - शुभ गुणों के आचरण का नाम ही धर्म है। मन-वचन-कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि का नाम धर्म है। संसार के सभी मनुष्यों का यही धर्म है जिसे वेद में मानव धर्म कहा गया है।

ईसाई, पारसी, यहूदी, इस्लाम आदि धर्म नहीं हैं। ये पंथ (मजहब, सम्प्रदाय, religion) हैं जो किसी व्यक्ति द्वारा चलाए लोगों के समूह हैं। इन सम्प्रदायों के कारण ही संसार में अशान्ति और शत्रुता है। ईश्वर ने ये पंथ नहीं बनाए, सिरफ इंसान बनाए हैं। इसलिए सही अर्थों में इंसान ही बनना चाहिए।

4. श्राद्ध — जीवित माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि की खान-पान, वस्त्र, निवास, सद्व्यवहार से सेवा करने को ही आर्य समाज श्राद्ध मानता है। जो मर गए हैं उनके प्रति ये बातें लागू नहीं होतीं। मरने के बाद अगले जन्म में वे जहां चले गए हैं ईश्वर उनकी वहीं पर व्यवस्था करता है। अगर वे मनुष्य की योनि में गए हैं तो माता के स्तनों में वह दूध पहले ही पैदा कर देता है।

5. जातपात — देश में प्रचलित जातपात को आर्य समाज स्वीकार नहीं करता। वेदों में ऐसी जातपात का कोई विधान नहीं है। वेद तो कहता है - **अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय।** (ऋग्वेद 5-60-5) **अर्थ** — हम में कोई छोटा या बड़ा नहीं है। हम सब आपस में भाई-भाई हैं। हम सबको मिल करके समृद्धि के लिए काम करना चाहिए। महर्षि मनु ने समाज की सभी समस्याओं को तीन भागों में बांटा था - अज्ञान, अन्याय और अभाव। जो लोग शिक्षा द्वारा अज्ञान को दूर करते थे वे ब्राह्मण कहलाए, जो लोग समाज को सुरक्षा प्रदान करके अन्याय से बचाते थे वे क्षत्रिय कहलाए और जो लोग समाज की रोटी, कपड़ा, मकान आदि की आवश्यकताएं पूरी करते थे वे वैश्य कह जाते थे। शेष रहे लोग ऊपर बताए तीनों प्रकार के लोगों की सहायता करते थे, वे शूद्र कहलाए। यह व्यवस्था जन्म के आधार पर न थी, अपितु व्यक्ति की बौद्धिक और शारीरिक योग्यता के आधार पर थी। आर्य समाज इसी व्यवस्था को स्वीकार करता है जैसे आज कल अध्यापक हैं, पुलिस और सेना है, किसान और व्यापारी हैं। ये जन्म के आधार पर नहीं हैं अपितु व्यक्ति की योग्यता के अनुसार हैं।

6. अवतारवाद — सनातन धर्म के लोग ऐसा मानते हैं कि कोई विशेष काम करने के लिए ईश्वर मनुष्य के रूप में जन्म लेता है। इसे वे ईश्वर का अवतार मानते हैं। आर्य समाज ऐसा नहीं मानता।

ईश्वर पहले ही सब जगह विद्यमान है। इसलिए उसके आने जाने की बात सार्थक नहीं है। ईश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह सूर्य, चंद्र, तारे, पृथ्वी आदि सारे ब्रह्माण्ड को बनाता है। तो क्या किसी आदमी को मारने आदि छोटे काम उसके लिए मुश्किल हैं?नहीं। इसलिए उसके मनुष्य रूप में आने की कल्पना सर्वथा व्यर्थ है, ईश्वर का अपमान है। वह तो सब मनुष्यों के अन्दर पहले ही विद्यमान है। ईश्वर न जन्म लेता है, न मरता है, वह सदा एकसा सब जगह रहता है।

महाभारत में श्री कृष्ण जी कहते हैं - **अहं हि तत् करिष्यामि परमपुरुषकारतः। दैवं तु न मया शक्यं कर्म कर्त्तुं कथंचन।।** अर्थ - मैं एक श्रेष्ठ पुरुष की भान्ति अपनी मेहनत से तो काम करूँगा, परन्तु ईश्वर के विधान में दखल देना मेरे सामर्थ्य से बाहर है।

सीता हरण के बाद श्री रामचन्द्र जी लक्ष्मण से कहते हैं - न मद्विधो दुष्कृत कर्मकारी मन्ये द्वितीयो*स्ति वसुन्धारायाम्। शोकेन शोको हि परम्पराया मामेति भिन्दन् हृदयं मनश्च।। (वाल्मीकि रामायण - अरण्य काण्ड) अर्थ - मैं समझता हूँ कि इस भूमि पर मेरे समान दुष्कर्म करने वाला और कोई नहीं है क्योंकि शोक पर शोक मेरे हृदय और मन को भेदने को प्राप्त हो रहे हैं।

7. योगेश्वर श्री कृष्ण जी का पवित्र जीवन चरित्र — महाभारत में श्री कृष्ण जी का जीवन बड़ा पवित्र बताया गया है। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो - ऐसा नहीं लिखा। वे एक पत्नीव्रती थे। उनकी पत्नी थी रुकमणी। वे सुदर्शन चक्रधारी, योगेश्वर, नीतिनिपुन, युद्ध में पाण्डवों को विजय दिलाने वाले, कंस, जरासंध आदि दुष्ट पापाचारी राजाओं का वध करने वाले थे।

परन्तु भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में श्री कृष्ण जी पर दूध-दही-मक्खन की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासलीला क्रीड़ा आदि झूठे दोष लगाए हैं। गोपालसहस्रनाम में श्री कृष्ण जी को चौरजारशिखामणि तक का खिताब दिया गया है जिसका अर्थ है चोरों और जारों का सरदार। ऐसी बातों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुना कर दूसरे मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं और हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हैं।

महाभारत में वर्णित श्री कृष्ण जी का स्वरूप ही उनका वास्तविक स्वरूप है। भागवत आदि पुराण महर्षि वेद व्यास के बनाए हुए नहीं है। ये बहुत बाद में बनाए गए ग्रन्थ हैं जिनमें स्वार्थी लोगों ने श्री कृष्ण जी पर ऐसे झूठे लांछन लगाए हैं। आर्य समाज श्री कृष्ण जी के उसी रूप को स्वीकार करता है जो महाभारत में बताया गया है।

8. गंगा नदी का महत्त्व - गंगा एक बड़ी नदी है जो भारतवर्ष के बहुत से भूभाग में से होकर गुजरती है। देश की बहुत सी खेती-बाड़ी तथा अन्य जरूरतें गंगा के पानी पर निर्भर हैं। इसलिए देश के लिए गंगा का बड़ा महत्त्व है। ऐसा मान लेना कि गंगा में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं निरी अज्ञानता है। पाप या पुण्य का फल तो भोगे बिना नहीं मिटता। यही न्यायकारी प्रभु का अटल विधान है। **अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।** (मनुस्मृति 5-3) **अर्थ** — जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या से और तप से (सब प्रकार के कष्ट उठाकर भी धर्म का आचरण करने से) जीवात्मा पवित्र होता है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। आर्य समाज की यही मान्याता है।

9. सुख—दुख का कारण — कोई भी परेशानी आ पड़ने पर सनातनधर्मी लोग ग्रहों को उसका कारण मानते हैं। फिर ग्रहों को शान्त करने के लिए तथा मुसीबत से

निकलने का उपाय ढूँढने के लिए तथा-कथित पण्डितों के पास जाते हैं। ऐसे पण्डित लोग इधर-उधर की बातें करके उन्हें चक्रों में डालते हैं और वे झूठे आश्वासन देकर उनसे धन ऐंठते हैं। आर्य समाज मानता है कि सुख-दुख मनुष्य के अपने अच्छे और बुरे कामों का फल हैं। यह ईश्वर की न्याय व्यवस्था है - जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोया सो काटा। कोई पण्डित, पाधा, ज्योतिषी इस व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। ग्रह जड़ हैं जैसे हमारी पृथ्वी है। वे ज्ञानहीन हैं, बुद्धिहीन हैं। वे किसी से प्रेम या द्वेष नहीं कर सकते। ग्रहों का प्रभाव सबके ऊपर एकसा रहता है जैसे सूर्य का प्रकाश और गर्मी सबके लिए है।

10. व्रत — सनातनधर्मी लोग किसी विशेष दिन कम खाना, बदलकर खाना, कुसमय खाना या न खाने को व्रत मानते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध में वेद तो कुछ और ही कहता है जिसे आर्य समाज मानता है। **ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।** (यजुर्वेद, 1 - 5) **अर्थ** — हे सत्य धर्म के उपदेशक, व्रतों के पालक प्रभु! मैं असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने का व्रत लेता हूँ। आप मुझे ऐसा सामर्थ्य दो कि मेरा यह व्रत सिद्ध हो अर्थात मैं अपने व्रत पर पूरा उतरूँ।

11. दान — सुपात्र को दान देना एक शुभ कर्म है, परन्तु कुपात्र को देना पाप है। सुपात्र कौन - गरीब, रोगी, अंगहीन, अनाथ, कोढ़ी, विधवा या कोई भी जरूरतमन्द, विद्या और कला कौशल की वृद्धि के लिए, गोशाला, अनाथालय, हस्पताल आदि दान के सुपात्र हैं। **न पापत्वाय रासीय।** (अथर्ववेद)अर्थ - मैं पाप के लिए कभी दान न दूँ। **धनिने धनं मा प्रयच्छ। दरिद्रान्भर कौन्तेय। (महाभारत)** अर्थ - हे युधिष्ठर! धनवानों को धन मत दो, गरीबों की पालना करो। भरे पेट को रोटी देना उतना ही गलत है जितना स्वस्थ को औषधि। रोटी भूखे के लिए है और औषधि रोगी के लिए है। समुद्र में हुई वर्षा व्यर्थ है। **सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते। वार्यन्नगौमहीवासस्तिलका०चनसर्पिषाम्।** (मनुस्मृति 4-233) **अर्थ** — संसार में जितने दान हैं अर्थात जल, अन्न, गौ, भूमि, वस्त्र, तिल, सुवर्ण, घी आदि इन सब दानों से वेद विद्या का दान अति श्रेष्ठ है।

12. आर्य और हिन्दू शब्द — वेद, शास्त्र, मनुस्मृति, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी प्राचीन ग्रन्थों में आर्य शब्द ही मिलता है, हिन्दू नहीं। संस्कृत के कोष 'शब्दकल्पद्रुम' में आर्य शब्द के अर्थ - पूज्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, उदार, न्यायकारी, मेहनत करने वाला आदि किये हैं। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** (ऋग्वेद 9 - 63 - 5) अर्थ - सारे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ। **अनार्य इति मामार्याः पुत्र विकायकं ध्रुवम्।** (वाल्मीकि रामायण - अयोध्या काण्ड) **अर्थ** — (राजा दशरथ राम को वन में भेजना न चाहते थे) वे कहते हैं - आर्य लोग (सज्जन) मुझ पुत्र बेचने वाले को निश्चय ही अनार्य (दुष्ट) बताएंगे। हिन्दू शब्द मुसलमानों ने घृणा के रूप में हमें दिया है। यह फारसी भाषा का शब्द है। फारसी भाषा के शब्दकोश में 'हिन्दू' का अर्थ है - चोर, डाकू, गुलाम, काफिर, काला आदि। मुसलमान आक्रमणकारी जब भारत में आए उन्होंने यहां के लोगों को लूटा, मारा तथा पकड़ कर गुलाम बनाकर अपने साथ अपने देश में ले गए। वहां ले जाकर उनसे अनाज पिसवाया, घास खुदवाया, मल-मूत्र आदि उठवाया तथा बाजारों में बेचा। तब उन्होंने यहां के लोगों को 'हिन्दू' नाम दिया।

आठवीं सदी से पहले यानि कि मुसलमानों के आने से पहले भारतवर्ष में हिन्दू शब्द का प्रचलन न था, सब जगह आर्य और आर्यावर्त्त शब्द ही प्रसिद्ध थे। चीनी यात्री ह्यूनसांग भारत में सातवीं सदी में (सन् 631 से 645 तक) आया था। वह इस देश का नाम आर्य देश लिखता है।

सन् 1870 में काशी में टेढ़ा नीम नामक स्थान पर काशी के राजा के अधीन एक धर्मसभा हुई। सभा में विश्वनाथ शर्मा, बाबा शास्त्री आदि 45 विद्वानों ने विचार विमर्श के बाद यह व्यवस्था दी थी कि 'हिन्दू' नाम हमारा नहीं है, यह मुसलमानों की भाषा का है और इसका अर्थ है अधर्मी। अतः इसे कोई स्वीकार न करे। हिन्दू-शब्दो हि यवनेषु अधर्मीजन बोधकः। अतो नार्हति तत् शब्द बोध्यतां सकलो जनः।।

13. हम आर्य, जो आजकल हिन्दू नाम से जाने जाते हैं, ही भारतवर्ष के मूल निवासी हैं - संसार में सबसे पुराने कोई ग्रन्थ हैं तो वे हैं आर्यों के ग्रन्थ - वेद। संसार में सबसे पुराना कोई साहित्य है तो वह है आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में ऐसा नहीं लिखा है कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आए थे। इस देश का नाम पहले आर्यावर्त्त था ऐसा बहुत से ग्रन्थों में लिखा मिलता है। आर्यावर्त्त से पहले इस देश का क्या नाम था कहीं भी नहीं लिखा मिलता। अतः निश्चित है कि आर्यों से पहले इस देश में कोई और न था और न ही इस देश का कोई और नाम था। इसलिए यह बात कि 'आर्य' इस देश में कहीं बाहर से आकर बसे थे' सत्य नहीं है।

आर्यों (हिन्दूओं) में फूट डालने के लिए द्रविड़ों को आर्यों से भिन्न बताया गया था। जबकि वास्तविकता यह है कि द्रविड़ शब्द आर्य ब्राह्मणों के दस कुलों में से पांच कुलों में होता है जिसमें आदि शंकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुए। पीछे रूस में एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी। उसमें भारत सरकार के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भी भाग लिया था। उस प्रतिनिधि मण्डल में इतिहासविद, भाषा वैज्ञानिक तथा पुरातत्त्ववेत्ता थे। उन्होंने गोष्ठी में भाग लेते हुए आर्यों (हिन्दुओं) के ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि से आकर भारत में बस जाने की बात का एकमत होकर खण्डन किया था और उनके इस मत को गोष्ठी में उपस्थित सभी देशों के प्रतिनिधियों ने बहुत सराहा था। यह समाचार 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के 31 अक्तूबर 1977 के अंक में छपा था।

ईरान के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाया जाता रहा है ''आर्यों का एक समूह ईरान की ओर आया और यहीं बस गया। इसलिए अपने नाम पर उन्होंने इस देश का नाम ईरान रखा। हम उन आर्यों की सन्तान हैं।'' डेविड फ्रौले (David Frauley) ने एक पुस्तक लिखी है जिसका नमा है 'दी मिथ ऑफ दी आर्यन इनवेजन ऑफ इण्डिया'। वह लिखता है कि आर्यों के भारतवर्ष में कहीं बाहर से आने की बात तथा यहां के लोगों पर हमले की बात दोनों ही निराधार हैं। वह लिखता है कि भारत में आर्यों तथा अन्यों में धर्म और संस्कृति के आधार पर कोई भी भेद नहीं है। आर्य भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महाभारत काल से लेकर मुसलमानों का शासन आरम्भ होने तक यानि कि अब से पाँच हजार वर्ष पूर्व से लेकर आठ सौ वर्ष पूर्व तक दिल्ली पर शासन करने वाले सभी आर्य राजाओं के नाम तथा उनके शासन काल दिए हैं। इनमें महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराजा यशपाल तक एक सौ चौबीस राजे हुए जिन्होंने कुल चार हजार एक सौ सत्तावन वर्ष, नौ महीने, चौदह दिन राज्य किया। महाराजा युधिष्ठिर से पहले के सभी राजाओं के नाम महाभारत में लिखे हैं। इस बात से पूरी तरह प्रमाणित हो जाता है कि आर्य ही सदा से इस भूमि पर रह रह हैं।

14. तुलसी — एक औषधीय पौधा है। जैसे अदरक, हल्दी, सौंफ, जीरा, लहसुन आदि शरीर के लिए हितकारी हैं ऐसे ही तुलसी भी शरीर से बहुत से रोग दूर करती है।

15. तप — कष्ट उठाकर भी सत्य और पक्षपात रहित न्याय का आचरण, परोपकार आदि शुभ कर्म करने का नाम तप है। धूनी लगाके सेंकने का नाम तप नहीं है।

16. तीर्थ — 'जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' अर्थात जिन करके मनुष्य दुखों से तरें उनका नाम तीर्थ है। वेद आदि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, योगाभ्यास, परोपकार, सत्य का आचरण, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण दुखों से तारने वाले हैं, अतः ये तीर्थ हैं।

17. भाग्य क्या है — अपने ही किए हुए अच्छे-बुरे कर्म, जिनका फल हमें पहले नही मिला, अब मिल रहा है भाग्य कहलाता है।

18. फूल तोड़ना पाप है — ईश्वर ने फूल सुगन्धी और सुन्दरता के लिए दिए हैं। डाली से तोड़ने के थोड़ी देर बाद वे सुन्दरता और सुगन्ध दोनों खो बैठते हैं। पानी में पड़कर सड़कर वे दुर्गन्ध देते हैं जो प्राणियों के लिए अहितकर है। इस प्रकार सुगन्ध को दुर्गन्ध में बदल देना पाप कर्म है। डाली पर रहते हुए फूल सूखने पर भी कभी दुर्गन्ध नहीं देता।

19. जगराता धार्मिक कर्म नहीं है, अधार्मिक कर्म है — जगराता न धर्म का काम है और न ही पुण्य का काम है। जगराता में ऊँची आवाज में लाऊडस्पीकर लगाकर सैंकड़ों/हजारों लोगों को परेशान किया जाता है, विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुकावट पड़ती है, रोगियों का चैन छिनता है, सोने वाले सो नहीं सकते। शोर प्रदूषण **(Noise Pollution)** बहुत बढ़ जाता है जो कानों के लिए तथा दिमाग के लिए हानिकर है।

ईश्वर को तो कुछ भी सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत नहीं है। वह तो आपके मन की बात भी जानता है। दूसरे लोगों को जबरदस्ती सुनाने का आपका कोई अधिकार नहीं है। सब लोगों की अपनी-अपनी मानयताएं हैं। बहुत से लोग आपके जगराते को देखना या सुनना नहीं चाहते। आप उनकी आजादी छीन रहे हैं। जो लोग आपके जगराते में आएं और आपके पंडाल में बैठकर सुनना चाहें आप उन्हें सुना सकते हैं। पर आपके लाऊडस्पीकर की आवाज उस शामियाने के बाहर नहीं जानी चाहिए। जगराते में जो तारा देवी की कहानी सुनाई जाती है वह पूरी तरह से झूठी, असम्भव, अत्यन्त भयंकर तथा गुमराह करने वाली है। तारा देवी के कहने पर उसके पति महाराजा हरिश्चन्द्र ने अपने प्रिय नीले घोड़े का सिर काट दिया, फिर अपने पुत्र का सिर काट दिया, फिर घोड़ा और पुत्र - दोनों के शरीरों के टुकड़े-टुकड़े करके एक बरतन में डालकर आग पर रखकर उनको पकाया। पक जाने पर तारा ने उस बरतन को उठाकर माता महाकाली को भोग लगाया और राजा को उसमें से प्रसाद के तौर पर दिया। फिर मां (महाकाली) ने उस घोड़े को तथा बेटे को जीवित कर दिया। ऐसी बेतुका और बेहूदा कहानी सुन-सुनाकर जगराते वाले पता नहीं क्या सन्देश देना चाहते हैं। ऐसी कहानियों के प्रभाव में आकर तथा तान्त्रिकों के कहने पर लोग अपने और दूसरों के बच्चों को मारने का अपराध कर बैठते हैं। जगराता करने वाले लोग आम तौर पर शराबी-कबाबी होते हैं। इस प्रकार जगराते से सम्बन्धित हर बात अधर्म तथा पाप कर्म है।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, दूरभाषः 0172-4010679

आर्य समाजों के निर्वाचनः-

1. आर्य समाज, अशोक नगर, दिल्ली के चुनाव में श्री प्रकाशचन्द्र आर्य-प्रधान, श्री पवन गांधी-मन्त्री व श्री ओमप्रकाश चावला कोषाध्यक्ष चुने गये।
2. आर्य समाज, राज नगर, गाजियाबाद के चुनाव में श्री श्रद्धानन्द शर्मा-प्रधान, श्री सत्यवीर चौधरी -मन्त्री व श्री शशिबल गुप्ता -कोषाध्यक्ष चुने गये।
3. आर्य समाज, अशोंक विहार, फेज-2, दिल्ली के चुनाव में श्री सत्यपाल गांधी- प्रधान, श्री नन्दकिशोर मल्होत्रा- मन्त्री व श्री ओमप्रकाश गुप्ता- कोषाधयक्ष चुने गये।

दिल्ली आओ आयो दिल्ली पंहुचो आर्य युवको

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

रविवार, 6 सितम्बर 2015, प्रातः 9.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक

स्थानः स्वामी श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र, राजौरी गार्डन, (सूर्या होटल के सामने), नई दिल्ली–110027

कार्यक्रमः–

11 कुण्डीय यज्ञः प्रातः 9.00 से 10.30 बजे तक – **ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज**

मधुर भजनः प्रातः 10.30 से 11.00 बजे तक – **श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन'**

प्रातः 11.15 बजे–**ध्वजारोहणः श्री मायाप्रकाश त्यागी** (कोषाध्यक्ष,सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली)

विशेष आकर्षणः– प्रातः 11.30 से 1.00 बजे तक

आर्य युवकों/युवतियों द्वारा भव्य परेड़, योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, तलवार, जूडो–कराटे, बाक्सिंग, डम्बल, लेजियम, स्तूप, कमांडो ट्रेनिंग आदि का भव्य व्यायाम शक्ति प्रदर्शन होगा।

मुख्य अतिथिः– माननीय डा. हर्षवर्धन जी (केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार)

समारोह अध्यक्षः–डा. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

सान्निध्यः–श्री सुभाष आर्य (महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम)

विशिष्ट अतिथिः– श्री प्रवेश वर्मा (संसद सदस्य), श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

गरिमामय उपस्थितिः–श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री प्रभात शेखर, श्रीमती रमेश कुमारी, श्री राजीव कुमार परम, जगदीश आर्य, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाग्बा, सत्यनारायण डंग, मुन्शीराम सेठी, चौ.ब्रह्मप्रकाश मान, सुरेन्द्र मानकटाला, रणसिंह राणा, राजीव आर्य तथा वेद प्रकाश आदि।

आमन्त्रित विद्वानः डा. वागीश आचार्य (गुरूकुल,एटा), डा. धर्मेन्द्र शास्त्री, डा. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य सुधांशु जी (गुरूकुल खेड़ाखुर्द)।

नोटः 1. प्रातः राश–प्रातः 8 से 9 बजे तक, ऋषि–लंगर–दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक व चाय–जलपान सायं 4 से 5 बजे तक प्रबन्ध रहेगा। 2. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य जन यदि रूकने का कार्यकम हो तो अविलम्ब सूचित करते जिससे यथोचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

डा.अनिल आर्य	**महेन्द्र भाई**	**धर्मपाल आर्य**
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) व श्री रामहेत आर्य का निधन

आर्य जगत के महान संन्यासी, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष, वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी का गत् 5 अगस्त 2015 को चम्बा में निधन हो गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने आर्य समाज की अपूरणीय क्षति बताया, स्वामी जी का आर्य युवकों से बहुत लगाव था। रविवार, 9 अगस्त 2015 को सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली में श्रद्धाजंलि सभा आर्योजित की गई। चित्र में बाये से–स्वामी सौम्यानन्द जी, श्री मायाप्रकाश त्यागी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, सभा अध्यक्ष वैद्य इन्द्रदेव जी, प्रो.विठ्ठलराव (सभा मन्त्री), स्वामी श्रद्धानन्द जी व संयोजक डा.अनिल आर्य।

वैदिक विद्वान डा. महेश विद्यालंकार, राष्ट्रीय कवि प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, डा.धर्मवीर, आदित्य आर्य, मधुर प्रकाश आर्य, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, विद्यासागर वर्मा, रविन्द्र मेहता, आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य देव शर्मा, ओम सपरा, डा. ओमप्रकाश मान, बलजीत आदित्य, प्रवीन आर्य, कै.अशोक गुलाटी, नफेसिह देसवाल, सुरेन्द्र गुप्ता, पं. मेघश्याम वेदालंकार, आचार्य अमरदेव शास्त्री, बहिन प्रवेश व पूनम, ब्र.दीक्षेन्द्र, सन्तराम आर्य आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। द्वितीय चित्र–स्व. स्वामी सुमेधानन्द जी का परिषद् के आर्य महासम्मेलन में स्वागत करते आर्य समाज, वजीरपुर जे.जे.कालोनी, दिल्ली के कोषाध्यक्ष स्व. श्री रामहेत आर्य, श्री रामहेत आर्य का भी 2 अगस्त 2015 को रात्री में निधन हो गया था। आर्य जगत की विनम्र श्रद्धाजंलि।

श्री रविदेव गुप्ता पुनः प्रधान निर्वाचित व डा.रमा शर्मा ''प्रधानाचार्य'' बनी

रविवार, 9 अगस्त 2015,आर्य समाज,मस्जिद मोठ, नई दिल्ली में ''दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल'' के चुनाव में पुनः निर्वाचित प्रधान–श्री रविदेव गुप्ता,मन्त्री – श्री चतरसिंह नागर, कोषाध्यक्ष श्री ओमबीर सिंह को बधाई देते डा. अनिल आर्य,डा.जे.पी गुप्ता व श्री हरबंसलाल कोहली। द्वितीय चित्र – दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित ''हंसराज कालेज'' की नव नियुक्त प्रधानाचार्या,वैदिक विदुषी डा.रमा शर्मा को बधाई देते डा. अनिल आर्य।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970